पृष्ठ संख्या

गीतावली में गुण-वृत्ति-विधान ·७ — १०३—११०

माधुर्य गुण, श्रोज गुण, प्रसाद गुण, वर्ण-विन्यास-क्रम श्रथवा वृत्ति-विनियोग, उपनागरिका वृत्ति, परुषा वृत्ति, कोमला वृत्ति ।

गीतावली की पद-योजना ·८ — १११—११५

छन्द शास्त्रीय सीमा, भावानुकूलता, लय, श्रत्यानुप्रास श्रादि ।

गीतावली में संवाद-योजना ·९ — ११६—१२८

प्रत्युत्पन्नमतित्व, काव्य में संवाद की संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, भाव-प्रवणता, नाटकीय भंगिमा, वचन, विदग्धता, कथन-संगति, गतिशीलता, व्यवहारिक भाषा, शिष्टता, व्यंजना । (१) राम-भरत-संवाद, (२) जटायु-राम-संवाद, (३) विभीषण-राम-संवाद, (४) जानकी-त्रिजटा-संवाद, (५) श्रंगद-रावण-संवाद, (६) हनुमान-सीता-संवाद, (७) विश्वामित्र-दशरथ-संवाद, (८) विश्वामित्र-जनक-संवाद, (९, १०) शुक-सारिका संवाद तथा मुद्रिका-सीता-संवाद ।

गीतावली में प्रकृति-चित्रण ·१० — १२९—१४२

(१) नैसर्गिक रूप में प्रकृति-वर्णन, (२) मानवीय विशेषताश्रों से युक्त प्रकृति, (३) श्रचेतन नैसर्गिक-चित्रण, (४) चेतनीकृत प्रकृति । गीतावली में (१) उद्दीपन रूप में प्रकृति-चित्रण, (२) श्रलंकार-विधान के रूप में प्रकृति-चित्रण—(क) श्रनुप्रास बद्ध प्रकृति-वर्णन, (ख) रूपक के रूप में प्रकृति-चित्रण, (ग) उत्प्रेक्षा रूप में प्रकृति-वर्णन, (घ) उपमा रूप में प्रकृति-वर्णन, (ङ) भ्रान्तिमान के श्रारोप से, (च) सन्देह के श्रारोप से । (३) उपदेशात्मक रूप में प्रकृति-वर्णन । चित्रात्मकता ।

पृष्ठ संख्या

गीतावली की भाषा ·११ — १४३—१५९

गीतावली का शब्द-भाण्डार; तत्सम या संस्कृत निष्ठ शब्द; श्रर्द्ध तत्सम या तद्‌भव शब्द; गीतावली में देशज शब्द; श्रन्य प्रदेशज शब्द; विदेशी शब्द; ढाले या गढ़े गए शब्द; ब्रजी के संज्ञा-क्रिया-पद; मुहावरे श्रौर लोकोक्तियाँ श्रौर उनका संग्रह ।

गीतावली के कुछ विशिष्ट शब्द-प्रयोग ·१२ — १६०—१८१

श्ररघ; श्रहेरी; श्रारती उतारना; उकठना; कनसुई लेना कलेऊ; कीरै श्ररघ-घर्चा; कुश-साथरी; कूबर की लात; केलि-गृह; खरि खाना; खेत के धोखे; गगन से तारा टूटना; गुड़ी विनु बाय; घमोइ करना; घुटी; चाँचरि; चित्रकूट-कथा; छठी; जल-श्रंजलि देना; ज्योति-लिंग-कथा; टोना पढ़ना; दूध की माखी; दुष्ट दृष्टि; नाम-करण; निराना; पंथ-कथा; पालना; पाँसे पड़ना; पिंड देना; पुटपाक-रसराज; फगुश्रा मनाना; फल साग के पाहुने; बधावा; बाँह-पगार; मघा-जल; मलार; मसान-पावक; रक्षा-ऋचा; रोटिहा; बसन्त-विहार; विन्ध्य-श्रगस्त्य-कथा; लोहे ललकारना, सगुन मनाना; साग खाकर जनना; साढ़ी काढ़ना; सार करना; सिला-लवनी; सुर-निमेष; सोहिला; स्वांग-खग-जति-न्याउ; हांक देना; हिंडोला; हेतुवाद; होरी ।

कुछ स्मरणीय पंक्तियाँ ·१३ — १८२—१९२